

中文大辭典

第九册

中文大辭典編纂委員會編纂

中文大辭典

第九冊

中國文化研究所印行

中文大辭典部首檢字表

𣎵	𣎶	𣎷	𣎸	𣎹	𣎺	𣎻	𣎼	𣎽	𣎾	𣎿	𣏀	𣏁	𣏂	𣏃	𣏄	𣏅	𣏆	𣏇	𣏈	𣏉	𣏊	𣏋	𣏌	𣏍	𣏎	𣏏	𣏐	𣏑	𣏒	𣏓	𣏔	𣏕	𣏖	𣏗	𣏘	𣏙	𣏚	𣏛	𣏜	𣏝	𣏞	𣏟	𣏠	𣏡	𣏢	𣏣	𣏤	𣏥	𣏦	𣏧	𣏨	𣏩	𣏪	𣏫	𣏬	𣏭	𣏮	𣏯	𣏰	𣏱	𣏲	𣏳	𣏴	𣏵	𣏶	𣏷	𣏸	𣏹	𣏺	𣏻	𣏼	𣏽	𣏾	𣏿	𣐀	𣐁	𣐂	𣐃	𣐄	𣐅	𣐆	𣐇	𣐈	𣐉	𣐊	𣐋	𣐌	𣐍	𣐎	𣐏	𣐐	𣐑	𣐒	𣐓	𣐔	𣐕	𣐖	𣐗	𣐘	𣐙	𣐚	𣐛	𣐜	𣐝	𣐞	𣐟	𣐠	𣐡	𣐢	𣐣	𣐤	𣐥	𣐦	𣐧	𣐨	𣐩	𣐪	𣐫	𣐬	𣐭	𣐮	𣐯	𣐰	𣐱	𣐲	𣐳	𣐴	𣐵	𣐶	𣐷	𣐸	𣐹	𣐺	𣐻	𣐼	𣐽	𣐾	𣐿	𣑀	𣑁	𣑂	𣑃	𣑄	𣑅	𣑆	𣑇	𣑈	𣑉	𣑊	𣑋	𣑌	𣑍	𣑎	𣑏	𣑐	𣑑	𣑒	𣑓	𣑔	𣑕	𣑖	𣑗	𣑘	𣑙	𣑚	𣑛	𣑜	𣑝	𣑞	𣑟	𣑠	𣑡	𣑢	𣑣	𣑤	𣑥	𣑦	𣑧	𣑨	𣑩	𣑪	𣑫	𣑬	𣑭	𣑮	𣑯	𣑰	𣑱	𣑲	𣑳	𣑴	𣑵	𣑶	𣑷	𣑸	𣑹	𣑺	𣑻	𣑼	𣑽	𣑾	𣑿	𣒀	𣒁	𣒂	𣒃	𣒄	𣒅	𣒆	𣒇	𣒈	𣒉	𣒊	𣒋	𣒌	𣒍	𣒎	𣒏	𣒐	𣒑	𣒒	𣒓	𣒔	𣒕	𣒖	𣒗	𣒘	𣒙	𣒚	𣒛	𣒜	𣒝	𣒞	𣒟	𣒠	𣒡	𣒢	𣒣	𣒤	𣒥	𣒦	𣒧	𣒨	𣒩	𣒪	𣒫	𣒬	𣒭	𣒮	𣒯	𣒰	𣒱	𣒲	𣒳	𣒴	𣒵	𣒶	𣒷	𣒸	𣒹	𣒺	𣒻	𣒼	𣒽	𣒾	𣒿	𣓀	𣓁	𣓂	𣓃	𣓄	𣓅	𣓆	𣓇	𣓈	𣓉	𣓊	𣓋	𣓌	𣓍	𣓎	𣓏	𣓐	𣓑	𣓒	𣓓	𣓔	𣓕	𣓖	𣓗	𣓘	𣓙	𣓚	𣓛	𣓜	𣓝	𣓞	𣓟	𣓠	𣓡	𣓢	𣓣	𣓤	𣓥	𣓦	𣓧	𣓨	𣓩	𣓪	𣓫	𣓬	𣓭	𣓮	𣓯	𣓰	𣓱	𣓲	𣓳	𣓴	𣓵	𣓶	𣓷	𣓸	𣓹	𣓺	𣓻	𣓼	𣓽	𣓾	𣓿	𣔀	𣔁	𣔂	𣔃	𣔄	𣔅	𣔆	𣔇	𣔈	𣔉	𣔊	𣔋	𣔌	𣔍	𣔎	𣔏	𣔐	𣔑	𣔒	𣔓	𣔔	𣔕	𣔖	𣔗	𣔘	𣔙	𣔚	𣔛	𣔜	𣔝	𣔞	𣔟	𣔠	𣔡	𣔢	𣔣	𣔤	𣔥	𣔦	𣔧	𣔨	𣔩	𣔪	𣔫	𣔬	𣔭	𣔮	𣔯	𣔰	𣔱	𣔲	𣔳	𣔴	𣔵	𣔶	𣔷	𣔸	𣔹	𣔺	𣔻	𣔼	𣔽	𣔾	𣔿	𣕀	𣕁	𣕂	𣕃	𣕄	𣕅	𣕆	𣕇	𣕈	𣕉	𣕊	𣕋	𣕌	𣕍	𣕎	𣕏	𣕐	𣕑	𣕒	𣕓	𣕔	𣕕	𣕖	𣕗	𣕘	𣕙	𣕚	𣕛	𣕜	𣕝	𣕞	𣕟	𣕠	𣕡	𣕢	𣕣	𣕤	𣕥	𣕦	𣕧	𣕨	𣕩	𣕪	𣕫	𣕬	𣕭	𣕮	𣕯	𣕰	𣕱	𣕲	𣕳	𣕴	𣕵	𣕶	𣕷	𣕸	𣕹	𣕺	𣕻	𣕼	𣕽	𣕾	𣕿	𣖀	𣖁	𣖂	𣖃	𣖄	𣖅	𣖆	𣖇	𣖈	𣖉	𣖊	𣖋	𣖌	𣖍	𣖎	𣖏	𣖐	𣖑	𣖒	𣖓	𣖔	𣖕	𣖖	𣖗	𣖘	𣖙	𣖚	𣖛	𣖜	𣖝	𣖞	𣖟	𣖠	𣖡	𣖢	𣖣	𣖤	𣖥	𣖦	𣖧	𣖨	𣖩	𣖪	𣖫	𣖬	𣖭	𣖮	𣖯	𣖰	𣖱	𣖲	𣖳	𣖴	𣖵	𣖶	𣖷	𣖸	𣖹	𣖺	𣖻	𣖼	𣖽	𣖾	𣖿	𣗀	𣗁	𣗂	𣗃	𣗄	𣗅	𣗆	𣗇	𣗈	𣗉	𣗊	𣗋	𣗌	𣗍	𣗎	𣗏	𣗐	𣗑	𣗒	𣗓	𣗔	𣗕	𣗖	𣗗	𣗘	𣗙	𣗚	𣗛	𣗜	𣗝	𣗞	𣗟	𣗠	𣗡	𣗢	𣗣	𣗤	𣗥	𣗦	𣗧	𣗨	𣗩	𣗪	𣗫	𣗬	𣗭	𣗮	𣗯	𣗰	𣗱	𣗲	𣗳	𣗴	𣗵	𣗶	𣗷	𣗸	𣗹	𣗺	𣗻	𣗼	𣗽	𣗾	𣗿	𣘀	𣘁	𣘂	𣘃	𣘄	𣘅	𣘆	𣘇	𣘈	𣘉	𣘊	𣘋	𣘌	𣘍	𣘎	𣘏	𣘐	𣘑	𣘒	𣘓	𣘔	𣘕	𣘖	𣘗	𣘘	𣘙	𣘚	𣘛	𣘜	𣘝	𣘞	𣘟	𣘠	𣘡	𣘢	𣘣	𣘤	𣘥	𣘦	𣘧	𣘨	𣘩	𣘪	𣘫	𣘬	𣘭	𣘮	𣘯	𣘰	𣘱	𣘲	𣘳	𣘴	𣘵	𣘶	𣘷	𣘸	𣘹	𣘺	𣘻	𣘼	𣘽	𣘾	𣘿	𣙀	𣙁	𣙂	𣙃	𣙄	𣙅	𣙆	𣙇	𣙈	𣙉	𣙊	𣙋	𣙌	𣙍	𣙎	𣙏	𣙐	𣙑	𣙒	𣙓	𣙔	𣙕	𣙖	𣙗	𣙘	𣙙	𣙚	𣙛	𣙜	𣙝	𣙞	𣙟	𣙠	𣙡	𣙢	𣙣	𣙤	𣙥	𣙦	𣙧	𣙨	𣙩	𣙪	𣙫	𣙬	𣙭	𣙮	𣙯	𣙰	𣙱	𣙲	𣙳	𣙴	𣙵	𣙶	𣙷	𣙸	𣙹	𣙺	𣙻	𣙼	𣙽	𣙾	𣙿	𣚀	𣚁	𣚂	𣚃	𣚄	𣚅	𣚆	𣚇	𣚈	𣚉	𣚊	𣚋	𣚌	𣚍	𣚎	𣚏	𣚐	𣚑	𣚒	𣚓	𣚔	𣚕	𣚖	𣚗	𣚘	𣚙	𣚚	𣚛	𣚜	𣚝	𣚞	𣚟	𣚠	𣚡	𣚢	𣚣	𣚤	𣚥	𣚦	𣚧	𣚨	𣚩	𣚪	𣚫	𣚬	𣚭	𣚮	𣚯	𣚰	𣚱	𣚲	𣚳	𣚴	𣚵	𣚶	𣚷	𣚸	𣚹	𣚺	𣚻	𣚼	𣚽	𣚾	𣚿	𣛀	𣛁	𣛂	𣛃	𣛄	𣛅	𣛆	𣛇	𣛈	𣛉	𣛊	𣛋	𣛌	𣛍	𣛎	𣛏	𣛐	𣛑	𣛒	𣛓	𣛔	𣛕	𣛖	𣛗	𣛘	𣛙	𣛚	𣛛	𣛜	𣛝	𣛞	𣛟	𣛠	𣛡	𣛢	𣛣	𣛤	𣛥	𣛦	𣛧	𣛨	𣛩	𣛪	𣛫	𣛬	𣛭	𣛮	𣛯	𣛰	𣛱	𣛲	𣛳	𣛴	𣛵	𣛶	𣛷	𣛸	𣛹	𣛺	𣛻	𣛼	𣛽	𣛾	𣛿	𣜀	𣜁	𣜂	𣜃	𣜄	𣜅	𣜆	𣜇	𣜈	𣜉	𣜊	𣜋	𣜌	𣜍	𣜎	𣜏	𣜐	𣜑	𣜒	𣜓	𣜔	𣜕	𣜖	𣜗	𣜘	𣜙	𣜚	𣜛	𣜜	𣜝	𣜞	𣜟	𣜠	𣜡	𣜢	𣜣	𣜤	𣜥	𣜦	𣜧	𣜨	𣜩	𣜪	𣜫	𣜬	𣜭	𣜮	𣜯	𣜰	𣜱	𣜲	𣜳	𣜴	𣜵	𣜶	𣜷	𣜸	𣜹	𣜺	𣜻	𣜼	𣜽	𣜾	𣜿	𣝀	𣝁	𣝂	𣝃	𣝄	𣝅	𣝆	𣝇	𣝈	𣝉	𣝊	𣝋	𣝌	𣝍	𣝎	𣝏	𣝐	𣝑	𣝒	𣝓	𣝔	𣝕	𣝖	𣝗	𣝘	𣝙	𣝚	𣝛	𣝜	𣝝	𣝞	𣝟	𣝠	𣝡	𣝢	𣝣	𣝤	𣝥	𣝦	𣝧	𣝨	𣝩	𣝪	𣝫	𣝬	𣝭	𣝮	𣝯	𣝰	𣝱	𣝲	𣝳	𣝴	𣝵	𣝶	𣝷	𣝸	𣝹	𣝺	𣝻	𣝼	𣝽	𣝾	𣝿	𣞀	𣞁	𣞂	𣞃	𣞄	𣞅	𣞆	𣞇	𣞈	𣞉	𣞊	𣞋	𣞌	𣞍	𣞎	𣞏	𣞐	𣞑	𣞒	𣞓	𣞔	𣞕	𣞖	𣞗	𣞘	𣞙	𣞚	𣞛	𣞜	𣞝	𣞞	𣞟	𣞠	𣞡	𣞢	𣞣	𣞤	𣞥	𣞦	𣞧	𣞨	𣞩	𣞪	𣞫	𣞬	𣞭	𣞮	𣞯	𣞰	𣞱	𣞲	𣞳	𣞴	𣞵	𣞶	𣞷	𣞸	𣞹	𣞺	𣞻	𣞼	𣞽	𣞾	𣞿	𣟀	𣟁	𣟂	𣟃	𣟄	𣟅	𣟆	𣟇	𣟈	𣟉	𣟊	𣟋	𣟌	𣟍	𣟎	𣟏	𣟐	𣟑	𣟒	𣟓	𣟔	𣟕	𣟖	𣟗	𣟘	𣟙	𣟚	𣟛	𣟜	𣟝	𣟞	𣟟	𣟠	𣟡	𣟢	𣟣	𣟤	𣟥	𣟦	𣟧	𣟨	𣟩	𣟪	𣟫	𣟬	𣟭	𣟮	𣟯	𣟰	𣟱	𣟲	𣟳	𣟴	𣟵	𣟶	𣟷	𣟸	𣟹	𣟺	𣟻	𣟼	𣟽	𣟾	𣟿	𣠀	𣠁	𣠂	𣠃	𣠄	𣠅	𣠆	𣠇	𣠈	𣠉	𣠊	𣠋	𣠌	𣠍	𣠎	𣠏	𣠐	𣠑	𣠒	𣠓	𣠔	𣠕	𣠖	𣠗	𣠘	𣠙	𣠚	𣠛	𣠜	𣠝	𣠞	𣠟	𣠠	𣠡	𣠢	𣠣	𣠤	𣠥	𣠦	𣠧	𣠨	𣠩	𣠪	𣠫	𣠬	𣠭	𣠮	𣠯	𣠰	𣠱	𣠲	𣠳	𣠴	𣠵	𣠶	𣠷	𣠸	𣠹	𣠺	𣠻	𣠼	𣠽	𣠾	𣠿	𣡀	𣡁	𣡂	𣡃	𣡄	𣡅	𣡆	𣡇	𣡈	𣡉	𣡊	𣡋	𣡌	𣡍	𣡎	𣡏	𣡐	𣡑	𣡒	𣡓	𣡔	𣡕	𣡖	𣡗	𣡘	𣡙	𣡚	𣡛	𣡜	𣡝	𣡞	𣡟	𣡠	𣡡	𣡢	𣡣	𣡤	𣡥	𣡦	𣡧	𣡨	𣡩	𣡪	𣡫	𣡬	𣡭	𣡮	𣡯	𣡰	𣡱	𣡲	𣡳	𣡴	𣡵	𣡶	𣡷	𣡸	𣡹	𣡺	𣡻	𣡼	𣡽	𣡾	𣡿	𣢀	𣢁	𣢂	𣢃	𣢄	𣢅	𣢆	𣢇	𣢈	𣢉	𣢊	𣢋	𣢌	𣢍	𣢎	𣢏	𣢐	𣢑	𣢒	𣢓	𣢔	𣢕	𣢖	𣢗	𣢘	𣢙	𣢚	𣢛	𣢜	𣢝	𣢞	𣢟	𣢠	𣢡	𣢢	𣢣	𣢤	𣢥	𣢦	𣢧	𣢨	𣢩	𣢪	𣢫	𣢬	𣢭	𣢮	𣢯	𣢰	𣢱	𣢲	𣢳	𣢴	𣢵	𣢶	𣢷	𣢸	𣢹	𣢺	𣢻	𣢼	𣢽	𣢾	𣢿	𣣀	𣣁	𣣂	𣣃	𣣄	𣣅	𣣆	𣣇	𣣈	𣣉	𣣊	𣣋	𣣌	𣣍	𣣎	𣣏	𣣐	𣣑	𣣒	𣣓	𣣔	𣣕	𣣖	𣣗	𣣘	𣣙	𣣚	𣣛	𣣜	𣣝	𣣞	𣣟	𣣠	𣣡	𣣢	𣣣	𣣤	𣣥	𣣦	𣣧	𣣨	𣣩	𣣪	𣣫	𣣬	𣣭	𣣮	𣣯	𣣰	𣣱	𣣲	𣣳	𣣴	𣣵	𣣶	𣣷	𣣸	𣣹	𣣺	𣣻	𣣼	𣣽	𣣾	𣣿	𣤀	𣤁	𣤂	𣤃	𣤄	𣤅	𣤆	𣤇	𣤈	𣤉	𣤊	𣤋	𣤌
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

—

[illegible]

十畫

[illegible]

嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵
6872	6871	6870	6869	6868	6867	6866	6865	6864	6863	6862	6861	6860	6859	6858	6857	6856	6855	
二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	

嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵
6890	6889	6888	6887	6886	6885	6884	6883	6882	6881	6880	6879	6878	6877	6876	6875	6874	6873
三	三	三	三	三	三	三	三	三	三	三	三	三	三	三	三	三	三

嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵
6907	6906	6905	6904	6903	6902	6901	十三畫	6900	6899	6898	6897	6896	6895	6894	6893	6892	6891
二	二	二	二	二	二	二	十三畫	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二

嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵
6925	6924	6923	6922	6921	6920	6919	6918	6917	6916	6915	6914	6913	6912	6911	6910	6909	6908
二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二

嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵
6943	6942	6941	6940	6939	6938	6937	6936	6935	6934	6933	6932	6931	6930	6929	6928	6927	6926
二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二

嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵
6960	6959	6958	6957	6956	6955	6954	6953	6952	6951	十四畫	6950	6949	6948	6947	6946	6945	6944
二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	十四畫	二	二	二	二	二	二	二

嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵
6978	6977	6976	6975	6974	6973	6972	6971	6970	6969	6968	6967	6966	6965	6964	6963	6962	6961
二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二

嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	十五畫	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵	嫵
6996	6994	6993	6992	8991	十五畫	6990	6989	6988	6987	6986	6985	6984	6983	6982	6981	6980	6979
二	二	二	二	二	十五畫	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二	二

孃 7012 三	孃 7011 三	孃 7010 三	孃 7009 三	孃 7008 三	十六畫	孃 7007 三	孃 7006 三	孃 7005 三	孃 7004 三	孃 7003 三	孃 7002 三	孃 7001 三	孃 7000 三	孃 6999 三	孃 6998 三	孃 6997 三	孃 6996 三
孃 7029 三	孃 7028 三	孃 7027 三	孃 7026 三	孃 7025 三	十七畫	孃 7024 三	孃 7023 三	孃 7022 三	孃 7021 三	孃 7020 三	孃 7019 三	孃 7018 三	孃 7017 三	孃 7016 三	孃 7015 三	孃 7014 三	孃 7013 三
孃 7046 三	孃 7045 三	孃 7044 三	孃 7043 三	孃 7042 三	孃 7041 三	孃 7040 三	孃 7039 三	十八畫	孃 7038 三	孃 7037 三	孃 7036 三	孃 7035 三	孃 7034 三	孃 7033 三	孃 7032 三	孃 7031 三	孃 7030 三
孃 7061 三	孃 7060 三	二十一畫	孃 7059 三	孃 7058 三	孃 7057 三	二十畫	孃 7056 三	孃 7055 三	孃 7054 三	孃 7053 三	孃 7052 三	孃 7051 三	孃 7050 三	孃 7049 三	孃 7048 三	十九畫	孃 7047 三
子 7074 三	子 7073 三	子 7072 三	子部	孃 7071 三	孃 7070 三	孃 7069 三	二十四畫	孃 7068 三	孃 7067 三	二十三畫	孃 7066 三	二十二畫	孃 7065 三	孃 7064 三	孃 7063 三	孃 7062 三	孃 7061 三
孃 7089 三	孃 7088 三	孃 7087 三	孃 7086 三	孃 7085 三	孃 7084 三	孃 7083 三	三畫	孃 7082 三	孃 7081 三	孃 7080 三	孃 7079 三	孃 7078 三	孃 7077 三	孃 7076 三	孃 7075 三	孃 7074 三	孃 7073 三
孃 7105 三	孃 7104 三	五畫	孃 7103 三	孃 7102 三	孃 7101 三	孃 7100 三	孃 7099 三	孃 7098 三	孃 7097 三	孃 7096 三	孃 7095 三	孃 7094 三	孃 7093 三	孃 7092 三	孃 7091 三	孃 7090 三	孃 7089 三
孃 7122 三	孃 7121 三	孃 7120 三	孃 7119 三	孃 7118 三	六畫	孃 7117 三	孃 7116 三	孃 7115 三	孃 7114 三	孃 7113 三	孃 7112 三	孃 7111 三	孃 7110 三	孃 7109 三	孃 7108 三	孃 7107 三	孃 7106 三

10

[illegible]

[illegible]

111

[illegible]

【契讀】²⁴ 清仁宗之孫，封貝子。性好學，待賄弘德，進止有節。後授領漢軍都統，兼管火器營，遂不復入侍。穆宗微行，嘗流涕極諫。光緒初，授右宗令，任宗人府凡十六年。光緒中卒。見清史稿。

【契讀】²⁵ 清高宗曾孫。自號太素道人。又號幻園居士。嘉慶中，襲爵貝勒。果官正白旗漢軍副都統。爲好風雅，嗜致仕卒。著有明善堂集。見清史稿。

【契讀】²⁶ 清宣宗第七子。咸豐初封醇親王，與兄奕訢訓練京營，穆宗卒，子載灃入承大統，乃引嫌乞休。中法戰爭，代奕訢入軍機，與李鴻章創立北洋海軍。凡遇軍國重務，親覽頗周。平生自持謙謹，卒謚賢。見清史稿二百二十七。

【契讀】²⁷ 清宋銘之字。

契 6038

契 說文解字 契 上 王德之

契 孫康 契 方孝孺 契 祝允明

甲、【廣韻】苦計切【集韻】「韻會」結計切【正韻】去計切 音契 契 去聲

乙、【廣韻】苦結切【集韻】「韻會」正韻「結結切」 音入聲 契 入聲

丙、【集韻】「韻會」私列切【正韻】先結切 音入聲 契 入聲

丁、【廣韻】去迄切【集韻】欺迄切 音乞 契 入聲

戊、【集韻】訖結切 音結 契 入聲

甲、苦計切 大略也。刻木記事者也。【說文】契，大約也。从大初聲。易曰：後世聖人，易之以契契。【周禮·天官·小宰】六曰：聽取予以書契。【注】書契，謂出予受入之凡契。凡書契之最目，厥訟之要辭，皆曰契。【漢書·古今人表】自書契之作。【注

契，謂刻木以記事。○券契也。【禮記·曲禮上】獻弱者，執右契。【注】契，券契也。【管子·輕重乙】使無券契之實。【注】合之曰契。○因由也。【晉書·王湛傳】叶宜尼之遠契。○約束也。【戰國策·周策】獨知之契也。○交往也。【晉書·王敦傳】定金蘭之密契。○合也。【詩品】少與道契，終與俗違。○灼銀甲也。又灼龜甲之具。【詩·大雅·騶虞】爰契我龜。○契，契灼其龜而下之。【集韻】契，所以然火而灼龜者也。即儀禮所謂楚尊是也。○絕也。與剋通。【說文通訓定聲】契，段借爲剋。【爾雅·釋詁】契，絕也。【注】今江東呼剋斷物爲契斷。○刻也。與契通。【說文通訓定聲】契，段借爲契。【釋名·釋書契】契，刻也。刻，識其數也。【疏證】以契爲刻者，呂氏春秋察今篇，契舟求劍，淮南齊俗訓，越人契臂，皆以契爲刻。○缺也。【漢書·母將降傳】契國威器，共其家備。【注】李奇曰，契，缺也。○剋也。剋也。【列子·湯問】契臂以誓。【釋文】契臂，剋臂出血也。○取也。與契通。【說文通訓定聲】契，段借爲契。【荀子·議兵】堵契司詐。【注】契，讀爲契，契取也。○切也。漢書·母將降傳，契國威器。【注】晉灼曰，契，取也。○切也。傷也。【周禮·考工記·梓人】馬不契齒。【注】契，讀爲契，契我龜之契，需讀爲畏懼之需，請不傷齒，不謂道里。○一角仰也。與契通。【說文通訓定聲】契，段借爲契，契，子夏傳，契一角仰也。○契，契憂說。參見契契條。○姓也。【萬姓統譜】契見姓死。

乙、苦結切 契契，憂說。參見契契條。○契契，動苦也。【集韻】契契，動苦也。

丙、私列切 人名。高辛氏之子，堯司徒，殷之先。與便，禹通。【說文通訓定聲】契，段借爲便，爲高。【書·舜典】讓於稷契暨皋陶。【傳】契，皋陶，二臣名。【詩·商頌·玄鳥】始合於契之廟。【釋文】契，本又作便，同。又作高，古字也。【漢書·東方朔傳

契，謂刻木以記事。○券契也。【禮記·曲禮上】獻弱者，執右契。【注】契，券契也。【管子·輕重乙】使無券契之實。【注】合之曰契。○因由也。【晉書·王湛傳】叶宜尼之遠契。○約束也。【戰國策·周策】獨知之契也。○交往也。【晉書·王敦傳】定金蘭之密契。○合也。【詩品】少與道契，終與俗違。○灼銀甲也。又灼龜甲之具。【詩·大雅·騶虞】爰契我龜。○契，契灼其龜而下之。【集韻】契，所以然火而灼龜者也。即儀禮所謂楚尊是也。○絕也。與剋通。【說文通訓定聲】契，段借爲剋。【爾雅·釋詁】契，絕也。【注】今江東呼剋斷物爲契斷。○刻也。與契通。【說文通訓定聲】契，段借爲契。【釋名·釋書契】契，刻也。刻，識其數也。【疏證】以契爲刻者，呂氏春秋察今篇，契舟求劍，淮南齊俗訓，越人契臂，皆以契爲刻。○缺也。【漢書·母將降傳】契國威器，共其家備。【注】李奇曰，契，缺也。○剋也。剋也。【列子·湯問】契臂以誓。【釋文】契臂，剋臂出血也。○取也。與契通。【說文通訓定聲】契，段借爲契。【荀子·議兵】堵契司詐。【注】契，讀爲契，契取也。○切也。漢書·母將降傳，契國威器。【注】晉灼曰，契，取也。○切也。傷也。【周禮·考工記·梓人】馬不契齒。【注】契，讀爲契，契我龜之契，需讀爲畏懼之需，請不傷齒，不謂道里。○一角仰也。與契通。【說文通訓定聲】契，段借爲契，契，子夏傳，契一角仰也。○契，契憂說。參見契契條。○姓也。【萬姓統譜】契見姓死。

乙、苦結切 契契，憂說。參見契契條。○契契，動苦也。【集韻】契契，動苦也。

丙、私列切 人名。高辛氏之子，堯司徒，殷之先。與便，禹通。【說文通訓定聲】契，段借爲便，爲高。【書·舜典】讓於稷契暨皋陶。【傳】契，皋陶，二臣名。【詩·商頌·玄鳥】始合於契之廟。【釋文】契，本又作便，同。又作高，古字也。【漢書·東方朔傳

契，謂刻木以記事。○券契也。【禮記·曲禮上】獻弱者，執右契。【注】契，券契也。【管子·輕重乙】使無券契之實。【注】合之曰契。○因由也。【晉書·王湛傳】叶宜尼之遠契。○約束也。【戰國策·周策】獨知之契也。○交往也。【晉書·王敦傳】定金蘭之密契。○合也。【詩品】少與道契，終與俗違。○灼銀甲也。又灼龜甲之具。【詩·大雅·騶虞】爰契我龜。○契，契灼其龜而下之。【集韻】契，所以然火而灼龜者也。即儀禮所謂楚尊是也。○絕也。與剋通。【說文通訓定聲】契，段借爲剋。【爾雅·釋詁】契，絕也。【注】今江東呼剋斷物爲契斷。○刻也。與契通。【說文通訓定聲】契，段借爲契。【釋名·釋書契】契，刻也。刻，識其數也。【疏證】以契爲刻者，呂氏春秋察今篇，契舟求劍，淮南齊俗訓，越人契臂，皆以契爲刻。○缺也。【漢書·母將降傳】契國威器，共其家備。【注】李奇曰，契，缺也。○剋也。剋也。【列子·湯問】契臂以誓。【釋文】契臂，剋臂出血也。○取也。與契通。【說文通訓定聲】契，段借爲契。【荀子·議兵】堵契司詐。【注】契，讀爲契，契取也。○切也。漢書·母將降傳，契國威器。【注】晉灼曰，契，取也。○切也。傷也。【周禮·考工記·梓人】馬不契齒。【注】契，讀爲契，契我龜之契，需讀爲畏懼之需，請不傷齒，不謂道里。○一角仰也。與契通。【說文通訓定聲】契，段借爲契，契，子夏傳，契一角仰也。○契，契憂說。參見契契條。○姓也。【萬姓統譜】契見姓死。

乙、苦結切 契契，憂說。參見契契條。○契契，動苦也。【集韻】契契，動苦也。

丙、私列切 人名。高辛氏之子，堯司徒，殷之先。與便，禹通。【說文通訓定聲】契，段借爲便，爲高。【書·舜典】讓於稷契暨皋陶。【傳】契，皋陶，二臣名。【詩·商頌·玄鳥】始合於契之廟。【釋文】契，本又作便，同。又作高，古字也。【漢書·東方朔傳

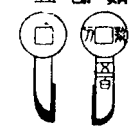


契 徒司 (會圖才三)

契爲鴻圖。【注】師古曰，契，讀與高同。丁、去迄切 北夷號。參見契契條。【集韻】契，字林，契丹，北夷號。

戊、訖結切 戲也。【集韻】契，戲也。

【契刀】 漢代，王莽所造之古錢。參見錯刀條。【漢書·食貨志】王莽居攝，變漢制，以周錢有子母相權，於是更造大錢，又造契刀，錯刀，契刀，其環如大錢，身形如刀，長二寸，文曰契刀五百，莽即真以爲書，刻字有金刀，通稱錯刀，契刀及五銖錢，而更作金銀龜貝錢布之品。【補注】錢沽款識曰，契刀二字在周郭，五百二字在柄，長二寸，字並陽識。按五百，謂值五百錢也。



【契刀】 藏契刀之囊。用以封密件者。【通典·職官·僕射】凡諸尚書文諸中書省者，密事，皆以契刀囊盛之，封以丞相印。

【契文】 殷虛所發現之甲骨文，皆契刀所刻，故亦稱契文。清孫詒讓有契文舉例。參見甲骨文條。

【契文舉例】 卷名。二卷。清孫詒讓撰。就殷墟發掘之契骨龜甲文字而研究之著作也。收於古石庵叢書三集第四、五冊。

【契元】 宋楊璞之字。

【契友】 親密而意氣相投之友人也。

【契父】 即義父。義父也。

【契丹】 國名。本東胡種，秦漢時爲匈奴所破，保有鮮卑山之地，魏晉時，其酋阿比能，爲魏所殺，其族又逃至潢水之南，黃龍之北，至元魏時，始自號契丹，所屬分八部，部之長號曰大人，而常推一大人建旗鼓以統八部，唐時耶律阿保機爲大人，統八部，不久，盡殺諸部大人，兼併其地，聖時歷破奚及渤海，置軍，女僕諸部落，復取突厥故土，有今遼、吉、黑、熱、察綏諸省及冀、晉二省之北部，與蒙古之地，勢極全盛，唐時改國號曰遼，宋時爲金所滅。【唐書·契丹傳】契丹先爲匈奴所破，保鮮卑山，至元魏自號曰契丹。【李衛公問對上】近契丹奚皆內屬。